International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 7, November-December 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

केदारनाथ सिंह के काव्य में समाजदर्शन

मोनिका

शोधार्थी, हिंदी विभाग, एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय कैथल

शोध आलेख सार

केदारनाथ सिंह नारी प्रति उद्धात दृष्टिकोण के लिए विख्यात है । प्रसाद कि भांति नारी उनके लिए श्रद्धा है जो जीवन के समतल में पियूष स्त्रोत सी बहती है । साथ ही आधुनिक नारी की दोहरी भूमिका उसको मानसिक यंत्रणा को भी उद्घाटित करते हैं । स्त्री को वह समाज की पूरी स्वीकार करते हैं जिसके इर्द गिर्द परिवार एवं समुदाय अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करते हैं । समाज के उत्थान हेतु सक्रिय रहे साहित्यकारों तथा प्राणिमात्र के प्रति दवाई विभूतियों के जीवनाधारित कविताओं में भी वह समाज को उनके अवदान का बोध करवाकर हमें प्रेरित करते हैं ।

How to cite this paper: Monica "Social Philosophy in the Poetry of Kedarnath Singh" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-7, December 2022, pp.52-54, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52266.pdf

IJTSRD52266

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

प्रस्तावना

सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने सर्वांगीण विकास हेतु अपने सामाजिक वातावरण / परिवेश की परिस्तिथि पर आश्रित रहता है ये परिस्थितियां उसे प्रभावित भी करती है और उसका उत्थान / पतन हेतु भी उतरदायी अनोन्याश्रित रहते हैं। रचनाकार अपने युग की परिस्थितियों का भोक्ता भी है और उनका परिवर्तनकर्ता भी। अतः जहाँ वह अपनी रचनाओं में समाज को प्रतिविम्बित करता है वहां तत्कालीन समस्याओं का अपनी दूर दृष्टि द्वारा समाधान भी प्रस्तुत करता है। समाज का सर्वाधिक संवेदनशील सदस्य होने के नाते समान में पटरीत सूक्ष्म अति सूक्ष्म घटना भी उसके अंतर्मन को आलोदित करती है। अतः उसकी रचनाओं में परिवेश अपने समुचित रूप में उभरता है। अतएव किसी भी कवि / लेखक के काव्य के अनुशीलनोपर्यंत हम तत्कालीन समाज से भली - भांति अवगत हो सकते है।

समाज का अर्थ

सामाजिक शब्द की उत्पत्ति समाज में इक प्रत्यय लगाने में हुई है। सामाजिक अर्थात् समाज से सम्बन्धित समाज का अर्थ है मनुष्यों का समूह संघ, सभा, समुदाय ।1 समाज की वृहत परिधि। इसमें व्यक्ति परिवार ग्राम शहर, नगर, महानगर से लेकर राष्ट्र व समस्त विश्व समाहित होता है। चूंकि सभी मनुष्य पृथ्वी की संतान है। अतः सम्पूर्ण वसुंधरा एक वृहत समुदाय है एवं सभी मानव समाज का अविभाज्य अंग है।

परिभाषा

"मनुष्य समाज में जन्म लेता है और उसी के बीच में रहकर विभिन्न क्रियाकलाप करते हुए विकास की और अग्रसर होता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज से नाना रूपों में तथा अनेक सूत्रों से जुड़ा हुआ है। सामाजिक प्राणी होने के नाते वह समाज में रहकर अपनी वास्तविक प्रकृति का विकास करता है। वह सामाजिक क्रियाओं द्वारा अपने को अभिव्यक्त करता है तथा उसकी चेतना की संरचना भी सामाजिक सम्बन्धों पर निर्भर करती है। सामाजिक सम्बन्धों के माध्यम से ही वह अपनी चेतना व्यक्त करता है। 2 अतः स्पष्ट है की समाज ही मनुष्य के सर्वांगीण विकास के अवसर उपलब्ध कराता है। समाज अतिशय विस्तृत शब्द है। इसमें परिवार, धर्म, संस्कृति, अर्थ व राजनीतिक इत्यादि सम्मिलित है। जब समाज के किसी विशेष के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है तो वह समाज दर्शन कहलाता है। इसके अनुशीलन से तत्कालीन सामाजिक प्रवृत्तिओं व परिस्थितियों का बोध होता है।

सामाजिक विशलेषण

केदारनाथ सिंह का कवि - कर्म सन 1952-53 से प्रारम्भ होता है। यह समय स्वातत्रयोत्तर विकट परिस्थितियों से जूझ रहा था। स्वतंत्रता अपने साथ राष्ट्र विभाजन की जो विभीषिका आई थी, उससे लाखों व्यक्ति गृह एवं आजीविका विहीन होकर शरणार्थी के रूप में संघर्ष कर रहे थे। दैनिक उपभोक्ता सामग्री एवं अन्न वस्त्र के अभाव तथा सुरसा - मुख सी बढ़ती बेरोजगारी ने निम्न व निम्न मध्य वर्ग को आभावों में जीवन - यापन करने को विवश कर दिया था। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के विफल होने से नागरिकों के हृदयों में निराशा एवं क्षोम भर गया था। अभाव संतप्त समाज अपना क्षोभ हड़ताल, प्रदर्शन व सार्वजनिक

सम्पत्ति को हानि पहुंचाकर प्रकट करने लगा। वहीं पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित छात्र उदण्ड उनमें तत्सम्बन्धी कामनाओं का संचार कर दिया। अतृप्त कामनाएं हो गये। उच्च वर्ग की भोग विलासिता उन्हें अंतर्मुखी बनाकर मानसिक व्याधियों से संतृप्त करने लगी, जिनकी अभिव्यक्ति प्रयोगवादी साहित्य में मिलती है।

विस्थापन की पीड़ा

शब्द कोष के अनुसार विस्थापन का अर्थ है बलपूर्वक किसी स्थान से हटाना ।3 किसी व्यक्ति को जब उसके मूल स्थान से बलपूर्वक हटाया जाता है तो उसे विस्थापन कहते हैं। विस्थापन को विवश किये गए व्यक्ति विस्थापित कहलाते हैं। अर्थात कार्य को तलाश में किसी दूसरे या नए क्षेत्र में बसना विस्थापन कहलाता है। औद्योगिक नगरीकरण से उपरान्त इस समस्या का जन्म हुआ। इससे पूर्व तो मनुष्य अपने जन्म स्थान पर ही कार्य करके जीवन यापन करता था परन्तु औद्योगिकरण व नगरीकरण हेतु वनोन्मूलन किया गया। 4 नौकरियों की तलाश में युवा ग्रामों से पलायन कर शहरों - नगरों महानगरों में बस जाते हैं, लेकिन ग्राम मोहत्या पाते है और न ही नगरीय जीवानुकूल स्वंय को डाल पाते हैं इस विस्थापन पर केदारनाथ सिंह लिखते हैं मोटे तौर पर कहे तो ज्यादातर हिंदी के आधुनिक लेखन में विस्थापन की पीड़ा किसी न किसी रूप में ध्वनित होती है क्योंकि उसमें ज्यादातर लोग है जो गाँव से आए हैं, शहर के बन पाते है या नहीं बन पाते हैं, लेकिन शहर में अपने आपको एडजस्ट करने के लिए एक बड़ी लड़ाई लड़ते हैं उस लड़ाई में बहुत कुछ खोते हैं। एक खास तरह का मध्यम वर्ग शहरों में विकसित होता रहा है, जो गाँवों से आया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य उन्हीं लोगों का साहित्य है ।5

भारतीय समाज में जीवन की विसंगतियों

केदारनाथ सिंह अपने युग के सचेत कवि है उनको दृष्टि समाज में घटित सूक्ष्मातिसूक्ष्म घटनाओं में कार्य कारण का अन्वेषण करने में समर्थ है। जहां उनकी गुणग्राही दृष्टि तथ्यों में अंतर्भावों का अन्वेषण सारतत्व ग्रहण करती है, वहां सामाजिक विसंगतियों पर भी तीक्ष्ण दृष्टि रख कविताओं के माध्यम से उनका प्रतिकार करती है। उनकी सरिता में गहन पैठ के उपरान्त भारतीय समाज की अनेक विसंगतियाँ उद्घाटित होती है। जिनमें है जातिवाद और साम्प्रदायिकता ।

व्यक्तिवाद अलगाववाद और ऊँच नीच पर आधारित जातिवाद पर भारत में कहीं अधिक बल दिया जाता रहा है। बाद में हमारी जनता का दिमाग इस प्रवृत्ति का बंदी बन गया। हमारे पूरे इतिहास में यह बहुत बड़ी कमजोरी रही है यह कहा जा सकता है कि जाति व्यवस्था में सख्ती के साथ - साथ हमारी बौद्धिक जड़ता बढ़ती गई और हमारी जाति की रचनात्मक शक्ति धुंधालाती चली गई। 6

स्त्री के प्रति उद्धात दृष्टिकोण

"यंत्र नार्यस्तु पूजन्ते रमन्ते तत्र देवता" भारतीय समाज का सनातन आदर्श रहा है भारतीय समाज में प्रत्येक कर्म में नारों की भूमिका अनिवार्य है। स्त्री मर्यादा हर स्थिति में अक्षण्णु रखी जाती है स्त्री महता का इससे बड़ा प्रभाव और क्या हो सकता है कि यहाँ उसे देवी का सम्बोधन दिया गया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त भी स्वीकार करते हैं कि एक नहीं दो - दो मात्राएं नर से भारी नारी। लेकिन शताब्दियों से मुस्लिम शासन तथा अशिक्षा के कारण नारी को बंधन बद्ध रहने को विवश होना पड़ा। उसकी मेधा और ज्ञान हो गए। कवि के अनुसार स्त्री सृष्टि को जानना है। यथा पुत्री, भागिनों, प्रेयसी, जननी और भार्या हर रूप के अनेक पक्ष है। उसे जानना पुरुष सामर्थ्य से बाहर है। स्त्री भावना प्रधान है और पुरूष कर्म प्रधान, जिसमें पुरुषता है। अत : परस्पर विरोधी विचारधाराएं होने के कारण पुरूष स्त्री भावनाओं की बाह पाने में अक्षम है ।

विभूतियों एवं घटनाओं पर आधारित काव्य

समय का दिव्य झूला यदा कदा पृथ्वी की और झुककर महान विभूतियों को छोड़कर उद्धर्गामी हो जाता है। तब ये महान विभूतियाँ अपने सुकृत्यों से मानवता पर महत् उपकार कर उनके मार्गदर्शन एवं सेवा में निज जीवन कूच कृतय कर देती है। समाज इन्हें महापुरूष अवतारी इत्यादि संज्ञाओं से विभूषित करता है। साहित्य क्षेत्र में ऐसी विभूतियों यदा कदा प्रकट होकर समाज का मार्गदर्शन करती है। एक जागरूक व प्रबुद्ध कवि होने के नाते केदारनाथ सिंह ने इन महान विभूतियों से अपने काव्य को अलंकृत किया है। केदारनाथ सिंह में साहित्य जगत की विभूतियों के जीवन की विशिष्ट घटनाओं पर प्रकाश डाला है। भिखारी ठाकुर कैलाशपति निषाद, पाणिनि सलीम अली, निराला त्रिलोचन बंगाली जो प्रभुति विभूतियों के जीवनाधारित कविताओं पर उन्होंने गागर में सागर भरने का बहुत अच्छा प्रयास किया है। 7

निष्कर्ष

वर्तमान में कवि अपने परिवेश की चुनौतियों से जूझ रहा है। वह संक्रमण काल से गुजर रहा है। प्राचीन मूल्य ध्वस्त होता जा रहा है और नवीन मूल्यों की स्थापना हेतु न तो संस्कारों को समय है और बुद्धिजीवियों में एकता का अभाव होने से ये कोई विकल्प प्रस्तुत कर पाने में अक्षम है। केदारनाथ सिंह परिवेशगत यथार्थ को प्रस्तुत कर पाठकों में संवेदना जगाने का प्रयत्न कर रहे है। जैसा की श्री राम वर्मा लिखते है -

"हम जिस युग में सांस ले रहे हैं उस युग में सांस लेकर सर्जन तक के लिए पहल से अधिक अनुशासन और परिश्रम की आवश्यकता है।

केदारनाथ सिंह ईमानदारी पूर्वक सामाजिक यथार्थ का चित्रण कर रहे हैं यद्यपि उन्होंने प्रगतिवादी कंचि के रूप में काव्य यात्रा प्रारम्भ की थी, लेकिन आज वह नई एवं समकालीन कविता के समर्थ हस्ताक्षर है तीसरा सप्तक में ही उन्होंने घोषणा की थी। 8 केदारनाथ सिंह इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि सामाजिक उन्नति के लिए अत्यावश्यक है कि समाज जागरूक हो तभी वह समस्त कुरीतियों का हटकर सामना कर सकता है - " जय प्रकाश नारायण लिखते हैं जो समाज जागरूक नहीं होगा वह सुसंगठित शक्तिशाली भी नहीं हो सकता। राजसत्ता का अंकुश समाज पर नहीं होना चाहिए बल्कि समाज का अंकुश सत्ता पर होना चाहिए।

केदारनाथ सिंह नारी प्रति उद्धात दृष्टिकोण के लिए विख्यात है। प्रसाद कि भांति नारी उनके लिए श्रद्धा है जो जीवन के समतल में पियूष स्त्रोत सी बहती है। साथ ही आधुनिक नारी की दोहरी भूमिका उसको मानसिक यंत्रणा को भी उद्घाटित करते है स्त्री को वह समाज की धुरी स्वीकार करते है जिसके इर्द गिर्द परिवार एवं समुदाय अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करते हैं। समाज के

उत्थान हेतु सक्रिय रहे साहित्यकारों तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाई विभूतियों के जीवनाधारित कविताओं में भी वह समाज को उनके अवदान का बोध करवाकर हमें प्रेरित करते है।

संदर्भ

[1] आदर्श भार्गव हिन्दी शब्दकोष पू ० 754

[2] मेकाशवर तथा पेज सोसाइटी, एन इंट्रोडक्शन एनालिसिस पू. 23

[3] आदर्श भार्गव हिन्दी शब्दकोष पू. 710

[4] आलोचना जनवरी मार्च 2015, पृ० 14

[5] केदारनाथ सिंह मेरे समय के शब्द, राधाकृष्ण प्रकाशन सन 1993 पू 200

[6] पंडित जवाहरलाल नेहरू भारत की खोज, पृ. 23

[7] केदारनाथ सिंह, तात्सताय और साईकिल, राज कमल, सन 2005, पृ ० 07

[8] केदारनाथ सिंह, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ राज कमल 1995, पू० 96-97